

उप-वाह्य त्वचा पर सधन रंध्रों पर बनते हैं तथा अधिवृशण के माध्यम से फटकर एवं उजागर हो जाते हैं। परिणाम स्वरूप लाल भूरे बीजाणुओं के समूह पत्ती की ऊपर की सतह पर दिखायी देने शुरू हो जाते हैं। संक्रमण बढ़ने पर स्पॉट गहरे भूरे रंग के होकर आपस में मिलकर पत्ती पर फैल जाते हैं। अन्त में पत्तियाँ मुड़कर गिर जाती हैं एवं विपत्रण हो जाता है संक्रमित पौधे में फलियाँ कम बनती हैं एवं दाने भी छोटे रह जाते हैं।

किसानों के मित्र कीट

काक्सीनेलिडस Coccinellids: इनके ग्रब दुबले एवं इनके वक्षांग एवं पैर अच्छी तरह से विकसित होते हैं एवं इनके प्यूपा पौधों की सतह से लगे हुए रहते हैं एवं इनके उपांग सामने की तरफ होते हैं। इनके व्यस्क चमकीले पीले, नांगी या गहरे लाल रंग के होते हैं एवं इनके सामने के पंखों पर अधिकतर छोटे काले धब्बे होते हैं तथा व्यस्कों के पैर, सिर और एंटीना काले रंग के होते हैं। कुछ प्रजातियों के सामने के पंख पूरी तरह से काले, भूरे या घूसर रंग के होते हैं।

मकड़ियाँ Spiders: मकड़ियों का शरीर दो भागों में बँटा होता है, अगला शिरोवक्ष एवं पिछला उदर होता है इनके पंख एवं एंटीना नहीं होते हैं। इनके शिशु व्यस्कों के समान दिखते हैं। मकड़ियाँ रंग, आकार, उछलने का तरीका एवं उनके द्वारा बनाये गये जालों के आधार पर विभिन्न प्रकार की होती हैं।

समेकित नाशीजीव प्रबन्धन (आई.पी.एम.)

मूंगफली की फसल में प्रमुख कीड़ों एवं रोगों से बचाव व उनके नियंत्रण के लिए एक आई. पी. एम. तकनीकी/मॉड्यूल का संश्लेषण व मूल्यांकन करके तथा क्षेत्र विशेष के अनुसार उसमें संशोधन करके किसानों के खेतों में प्रसारित किया गया। आई.पी. एम. अपनाने वाले किसानों की उपज में वृद्धि तथा शुद्ध आय में बढ़ोत्तरी हुई।

आई.पी.एम. पद्धति अपनाने के लिए किसान भाई निम्न कार्य करें

बुआई से पहले

1. भूमि में मौजूद नाशीजीवों को नष्ट करने के लिए फसल बोने से पहले अप्रैल-मई में खेत की 2-3 बार गहरी जुताई करें।
2. दीमक एवं अन्य कीड़ों से बचाव के लिए खेत में कच्ची गोबर की खाद का प्रयोग न करें।
3. बुआई से 15 दिन पहले खेत में 250 कि. ग्राम प्रति है. की दर से नीम की खली/केक मिलायें।
4. *ट्राइकोडर्मा हरजियानम* द्वारा भूमि उपचार करें, इसके लिए 4 कि. ग्राम *ट्राइकोडर्मा* प्रति हेक्टेयर के हिसाब से 150 कि. ग्राम गोबर की खाद या कम्पोस्ट या फार्म यार्ड मैनयोर में मिलाएँ और उसे 7-15 दिन के लिये छोड़ दें। उसके बाद *ट्राइकोडर्मा* द्वारा उपचारित खाद को बुआई से पहले खेत में मिला दें।

बीज, बीजोपचार एवं फसल की बुआई

1. क्षेत्र विशेष के लिए क्षेत्रीय विश्वविद्यालय/कृषि विभाग द्वारा सिफारिश की गई मूंगफली की किस्म को बोयें।
2. बीज को इमीडाक्लोरपिड 2 मि.ली. प्रति एक कि. ग्राम बीज की दर से तथा *ट्राइकोडर्मा हरजियानम* 10 ग्राम प्रति एक कि.ग्राम बीज की दर से उपचारित करें।

(क) *ट्राइकोडर्मा* द्वारा बीजोपचार करने के लिए 10 ग्राम *ट्राइकोडर्मा* पाउडर/कि.ग्रा. बीज के हिसाब से 4-5 मि. लि. पानी में मिलाकर उस का पेस्ट बना लें। फिर उस *ट्राइकोडर्मा* पेस्ट को बीज में मिलाकर 20-30 मिनट के लिये छाया में सुखा लें और उसके बाद उस बीज की बुआई करें।

(ख) बीज को इमीडाक्लोरपिड 2 मि.ली./कि. ग्राम बीज की दर से उपचारित करें।

3. दक्षिण भारत में, मूंगफली के खेत के किनारे-किनारे पर ज्वार/बाजरा की फसल को लगायें।
4. दक्षिण भारत में, अंतरा फसल के रूप में मूंगफली की 11 लाइन के बीच में 1 लाइन अरहर की फसल की लगायें।

फसल वृद्धि अवस्था एवं फूल आने वाली अवस्था

1. फसल की छोटी अवस्था में कीड़े दिखने पर 5 प्रतिशत नीम बीज के सत्त (एनएसकेई) के घोल का छिड़काव करें।
2. सफेद लट के प्रबंधन के लिए मानसून शुरू होते ही उसे आश्रय देने वाले पेड़ों जैसे कि खेजड़ा, बेर, नीम, अमरुद एवं आम की कटाई छटाई करें एवम् उन पर आवश्यकतानुसार कार्बोरिल 2 मि. ली./लीटर पानी में या क्यूनॉलफॉस 2 मि. ली./लीटर पानी में मिलाकर छिड़काव करके सायंकाल के समय मिथोक्सी बैनजीन (एनीसोल) दवा में भीगे स्पंज के 3-4 टुकड़ों को पेड़ पर लटका दें।
3. खेत में परभक्षी चिड़ियों के बैठने के लिए "टी" के आकार की प्रति है. दस लकड़ी की खपच्चियों को लगायें।
4. अगेती पर्ण चित्ती, पछेती पर्ण चित्ती व स्तंभमूलसंधि विगलन रोग का संक्रमण होने पर आवश्यकतानुसार कार्बेनडाजिम 0.05 प्रतिशत + मैनकोजेब 0.2 प्रतिशत का छिड़काव करें (इसके लिए आधा ग्राम कार्बेनडाजिम व 2 ग्राम मैनकोजेब को प्रति एक लीटर पानी में मिलाकर दवा का घोल बनायें) एवं फसल बोने के 45 दिन एवं 60 दिन बाद छिड़काव करें।
5. *हैलिकोवरपा* एवं *स्पोडोप्टेरा* की निगरानी करने के लिए फेरोमैन ट्रैप 5 प्रति है। लगायें।
6. *हैलिकोवरपा*, बालों वाली लाल रंग की सूंड़ी के व्यस्क कीट, *स्पोडोप्टेरा* के नर एवं मादा कीटों को पकड़ने/ट्रैप करने हेतु लाईट ट्रैप-लाभदायक कीटों के प्रति सुरक्षित (NCIPM मॉडल) को एक ट्रैप प्रति है. लगाएँ।



फेरोमैन ट्रैप



बालों वाली लाल रंग की सूंड़ी



व्यस्क कीट



लाईट ट्रैप

फली बनने एवं परिपक्वता की अवस्था

इसके बाद भी यदि फसल पर किसी कीड़े अथवा रोग का आक्रमण होता है तो उसके आर्थिक परिसीमा स्तर के अनुसार आवश्यकता आधारित कीटनाशी रसायनों या फफूंद नाशक का प्रयोग करें।

राज्य	संसोधित किस्म	
	खरीफ	रबी-समर (जायद)
आन्ध्र प्रदेश	कादिरी-6, नारायणी, आई.सी.जी.वी., 91114, कादिरी 9, अमया, प्रसूना ग्रीष्मा, अजेया, विजेता, जी.पी.बी.डी.-4	कादिरी-6, कादिरी हरीचंद्र, आई. सी.जी.वी. 00350, ग्रीष्मा
गुजरात	जी.जी.20, टी.जी. 37अ, जी.जी.-7, जी. जी.5, जे.एल. 501, जी जे.जी. 31	जी.जी.20, टी.जी 37अ, टी.पी जी. 41, जी.जी.6 डी.एच.86, जी.जे.जी 9
कर्नाटक	जी.पी.बी.डी.-4, अजेया, विजेता, टी.जी. एल.पी.एस.3, वी. आर.आई. 6, आई. सी. जी.वी 91114	टी.ए.जी.24, कादिरी, हरीचंद्रा, टी. जी.एल.पी.एस 3
तमिलनाडु	वी.आर.आई. 2,6,व 7, टी.एम.वी. 13,को. 6,5, ए.एल.आर. 2, जी.पी.बी.डी. 4, आई सी जी. वी. 00348	वी.आर.आई. 2, टी.एम.वी. 13, आई. सी.जी.वी. 00350
महाराष्ट्र	ए.के. 159,303,265, जे.एल. 220, 286,501, रत्नेश्वर, टी. एल. जी. 45	टी. ए. जी. 24, डी.एच. 86, जे. एल 286
राजस्थान	एच.एन.जी.10, गिरनार 2, प्रकाश, अम्बर, उत्कर्ष, टी.जी 37अ, जी.जी.14,21, एच.एन. जी.69,123, राज मूंगफली-1, टी.बी.जी.39, प्रताप मूंगफली-1,2	
मध्य प्रदेश	जे.जी.एन. 3,23, ए.के.159, जी.जी.8	
झारखण्ड	बी.ए.यू 13, गिरनार 3, जी.पी.बी.डी. 5, विजेता	डी. एच. 86,101, टी.जी. 38 बी, टी.जी.51
पंजाब	एम. 548, गिसार-2, एच.एन.जी. 10, 69, 123, प्रकाश, टी.जी. 37 अ, अम्बर, उत्कर्ष, जी.जी 14, 21, राज मूंगफली-1,	एस.जी. 99
उत्तर प्रदेश	प्रकाश, अम्बर, उत्कर्ष, एच.एन.जी 10,69,123, जी.जी. 14,21, गिरनार-2, टी.जी 37अ, राज मूंगफली-1,	(वसन्त ऋतु)
उत्तराखण्ड	वी. एल. मूंगफली-1	डी.एच 86, टी.जी. 37 अ (वसन्त ऋतु)
उड़ीसा	ओ.जी. 52-1, आई सी.जी.वी. 91114, गिरनार-3	ओ.जी. 52-1, टी.ए.जी.24, टी.जी. 51, 37 अ, 38 ब, डी. एच 86, 101
पश्चिम बंगाल	गिरनार-3	टी. ए. जी. 24, टी.जी.51, 37अ, 38ब, डी. एच. 86, 101
उत्तर पूर्व पहाड़ी	बी.ए.यू.13, आईसीजीएस 76, आईसीजी.वी. 86590, जीपीबीडी-5	टी.ए.जी. 24, टी. जी. 37 अ, 38 ब, टी.जी. 51, डी.एच 86, 101

आई.पी.एम. प्रणाली को अपनाने से उपज एवं शुद्ध लाभ में बढ़ोत्तरी

रा.स.ना.प्र. केन्द्र द्वारा विकसित आई.पी.एम. प्रणाली को वर्ष 2008 से वर्ष 2010 तक मिरजावाली मीर, हनुमानगढ़, राजस्थान के सिंचित क्षेत्र के किसानों द्वारा मूंगफली की फसल में अपनाने से उनकी उपज औसतानुसार 29.21 कु./है. जबकि गैर आई.पी.एम. किसानों की उपज 16.59 कु./है. ही रही एवं शुद्ध लाभ ₹ 46188/है. हुआ जबकि गैर आई.पी.एम. को केवल ₹ 20772 का शुद्ध लाभ हुआ। इसी प्रकार आंध्रप्रदेश के कदरी मंडल के असिंचित क्षेत्र के किसानों द्वारा आई. पी. एम. प्रणाली अपनाने से वर्ष 2008 एवं 2010 में आई. पी. एम. किसानों की उपज औसतानुसार 8.21 कु./है. जबकि गैर आई.पी.एम. किसानों की उपज केवल 6.49 कु./है. ही रही एवं उनकी शुद्ध लाभ ₹ 17,914 तथा गैर आई.पी.एम. किसानों की शुद्ध लाभ केवल ₹ 12,259/है. हुआ।

मूंगफली

में

समेकित नाशीजीव प्रबंधन

(आई.पी.एम.)



सुरेन्द्र कुमार सिंह, पी.वी. वर्मा, राकेश कुमार, एम. एस. यादव, नसीम अहमद, लक्ष्मी रेडी, एन. सी. वंकेटेश्वरलू, के. वमनना, एन. के. ज्योतस्ना, कुलदीप सिंह जाड़ो, पूनम जसरोटिया



राष्ट्रीय समेकित नाशीजीव प्रबन्धन केन्द्र

(भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद)

लाल बहादुर शास्त्री भवन, पूसा परिसर,
नई दिल्ली-110012



मूंगफली मृदा/मिट्टी में नाइट्रोजन की वृद्धि करने वाली लेग्युमिनेसी कुल की फसल है। यह खरीफ एवं रबी के मौसम में उगायी जाने वाली महत्वपूर्ण तिलहनी फसल है। इसकी उत्पत्ति ब्राजील में मानी जाती है। तिलहनी फसलों में इसका प्रमुख स्थान है। मूंगफली खाने में स्वादिष्ट, पौष्टिक एवं प्रोटीन का एक सस्ता स्रोत है इसमें विटामिन ए, बी व बी₂ भी प्रचुर मात्रा में होता है। हमारे देश में मूंगफली का उपयोग तेल में (81 प्रतिशत), बीज में (12 प्रतिशत), घरेलू उपयोग में (6 प्रतिशत) एवं निर्यात में (1 प्रतिशत) के रूप में होता है। हमारे देश में इसे मुख्यतः गुजरात, आन्ध्रप्रदेश, कर्नाटक, तमिलनाडू, राजस्थान, उड़ीसा एवं मध्य प्रदेश राज्यों में उगाया जाता है। भारत में मूंगफली के कुल उत्पादन का 80 प्रतिशत क्षेत्र असिंचित क्षेत्र में है। इसके पौधे में सूखा सहन करने की शक्ति होती है। मूंगफली की फसल में कीड़ों व रोगों द्वारा काफी नुकसान होता है, आई.पी.एम. को अपनाकर किसान भाई मूंगफली की फसल में होने वाले नुकसान को कम करके उपज को बढ़ा सकते हैं। इससे अधिक आमदनी और शुद्ध लाभ में बढ़ोत्तरी होती है।

मूंगफली के प्रमुख कीट

दीमक Termite : यह बहुभक्षी कीट है, खेतों में जब पौधे छोटे होते हैं तो यह इनकी जड़ों को काट देती है जिससे पौधे सूख जाते हैं। दीमक मूंगफली के पौधों के तने एवं फलियों को भी नुकसान पहुँचाती हैं। जिन पौधों पर दीमक का आक्रमण होता है उन पर कवक व जीवाणु जन्य रोग भी फैल जाते हैं।



दीमक से ग्रसित पौधों का निरीक्षण

सफेद लट White grub: इसका व्यस्क कीट गहरे भूरे रंग का 2.5 – 5.0 मि.मी. चौड़ा तथा 10–15 मि.मी. लम्बा होता है। मादा कीट आकार में नर की अपेक्षा बड़ी होती है। पूर्ण विकसित लट (ग्रब) 'C' अक्षर के आकार की मटमैली सफेद होती है। इसके लट (ग्रब) भूमि में जड़ को अत्यधिक हानि पहुँचाते हैं जिसके फलस्वरूप पौधे सूख जाते हैं।



लट(ग्रब)

सफेद लट

अमेरिकन सूंड़ी Helicoverpa: यह एक बहुभक्षी कीट है। इसका व्यस्क गहरे भूरे रंग का होता है जिसके अगले पंख पर वृक्क (Kidney) के आकार का धब्बा पाया जाता है एवं उस पर मटमैली कतारें देखी जा सकती हैं। इसके पिछले पंख तुलनात्मक रूप से सफेद रंग के होते हैं इसकी लार्वा/सूंड़ी लम्बी एवं भूरे रंग की होती है जिसके शरीर पर गहरे भूरे रंग एवं पीले रंग की धारियाँ पायी जाती हैं। इसकी सुंडियाँ पत्तियों को खाकर नुकसान पहुँचाती हैं।



सूंड़ी

व्यस्क

पत्ती भक्षक कीट Spodoptera litura: यह बहुभक्षी कीड़ा है इसके व्यस्क पतंगों के अगले पंख सुनहरे, भूरे रंग के सफेद धारीदार होते हैं। सुंडियाँ मटमैले हरे रंग की होती हैं जिनके शरीर पर पीले, हरे व नारंगी रंगों की लंबवत धारियाँ होती हैं। उदर के प्रत्येक खण्ड के दोनों ओर काले धब्बे होते हैं। नवजात इल्लियां पत्तियों को खाती हैं जिससे पत्तियों की शिराएँ ही शेष रह जाती है।



सूंड़ी

व्यस्क

अण्डों का समूह

पत्ती सुरंगी Leaf miner: इसका सूंड़ी पत्ती में सुरंग बना कर उसमें रहता है पूर्ण विकसित सूंड़ी हरे रंग का एवं इसका सिर व वक्ष गहरे हरे रंग का होता है। सूंड़ी पत्तियों में नुकसान करता हुआ पत्तियों में बनी सुरंगों व फफोलों में चलता है। सुरंगे सूंडियों की अवस्था अनुसार विभिन्न आकार की होती है। अधिक संक्रमण होने पर पूरी पत्ती संकुचित व भूरे रंग की होकर सूख जाती है।



पत्ती सुरंगी कीट का आक्रमण

चेपा Aphid: पौधों के ऊपरी भाग पर कीट-शिशु एवं व्यस्क एफिड्स की कालोनियाँ देखने को मिलती है कीट-शिशु आमतौर पर गहरे भूरे रंग के होते हैं, व्यस्क पंखदार या पंखहीन हरे, हरे-भूरे रंग या हरे-काले रंग के होते हैं। ये प्ररोह, पत्तियों एवं फूलों का रस चूसते हैं, प्रभावित पौधों के पत्ते विकृत एवं उनमें हरे रंग की कमी हो जाती है एवं पौधों का विकास अवरुद्ध हो जाता है। इनके द्वारा चिपचिपा द्रव छोड़ने से काली फफूंद पौधों पर जमा हो जाती है।



चेपा एवं तेला का आक्रमण

तेला जैसिड Jassid: जैसिड के शिशु व व्यस्क पीलापन लिए हरे रंग के होते हैं। जैसिड के द्वारा पत्तियों का रस चूसने के कारण उनकी शिरायें सफेद रंग की हो जाती हैं एवं पत्ती के अन्त में बीच की जगह 'ट' के आकार की आकृति बन जाती है। खेत में अधिक संक्रमण होने पर पौधों का रंग पीला झुलसा हुआ दिखायी देता है एवं इस अवस्था को 'होपर वर्न' कहते हैं।

थ्रिप्स Thrips: थ्रिप्स छोटे आकार के लगभग 2 मि.मी. लम्बे कीड़े हैं जो मुड़ी हुई पत्तियों व फूलों में पाये जाते हैं, ये अपने अण्डे तरुण ऊतकों में देते हैं। व्यस्क थ्रिप्स का शरीर नर्म एवं पंख झालरदार होते हैं। इनके द्वारा पत्तियों से रस चूसने के कारण प्रभावित पत्तियों की निचली सतह पर सफेद चकते बन जाते हैं। थ्रिप्स का अधिक आक्रमण होने पर पौधे की वृद्धि रुक जाती है।



थ्रिप्स का आक्रमण

मूंगफली के प्रमुख रोग

अगती पर्ण चित्ती Early leaf spot: इस रोग के धब्बे पौधे उगने के 10 से 18 दिनों के बाद पत्ती की उपरी सतह पर प्रकट होने शुरू हो जाते हैं। इस रोग के धब्बे 1 से 10 मि. मी. के गोलाकार या अनियमित आकार के हल्के पीले रंग के होते हैं बाद में यह धब्बे लाल – भूरे या काले रंग के हो जाते हैं। इन धब्बों की निचली सतह नारंगी रंग की होती है।



अगती पर्ण चित्ती संक्रमित पौधा

पछेती पर्ण चित्ती Late leaf spot : यह रोग पौधे उगने के 28 से 35 दिनों के बाद पत्ती की निचली सतह पर प्रकट होता है। इस रोग के वृत्ताकार धब्बों का आकार 1.5 से 5 मि. मी. का होता है। इस रोग के धब्बों का रंग पहले पीले रंग का होता है बाद में यह धब्बे पत्तियों के दोनों सतहों पर काले रंग के हो जाते हैं। निचली सतह पर यह धब्बे कार्बन की तरह काले नजर आते हैं।



पछेती पर्ण चित्ती संक्रमित पौधा

स्तंभमूलसंधि विगलन रोग Collar rot: यह मूंगफली का बीज जनित रोग है जो प्रभावित पौधों को शत-प्रतिशत हानि पहुँचाता है। रोग के लक्षण पौधों के उस भाग पर प्रकट होते हैं जो मिट्टी की सतह से लगा होता है। मिट्टी की सतह का तने का भाग (कालर भाग) रोग जनक फफूंद (*Aspergillus niger*) से ग्रसित हो जाता है। यह रोग पौधों के आधार को कमजोर कर देती है जिससे पौधे गिर जाते हैं एवं सूखकर मुरझा जाते हैं। इन प्रभावित पौधों के सूखी सड़न वाले स्थान पर रोग जनक फफूंद की उभरी हुई काली-काली रचनाएं स्पष्ट दिखाई देती हैं।



स्तंभमूलसंधि विगलन रोग प्रभावित

शुष्क जड़ विगलन रोग Dry root rot: रोग के शुरु के लक्षण तने के भूमि की सतह के एक दम ऊपरी हिस्से पर पानी से भीगी विक्षति जैसे धब्बों के रूप में प्रकट होते हैं। ये धब्बे धीरे-धीरे बढ़कर गहरे रंग के हो जाते हैं। ये विक्षति धीरे-धीरे गहरी होकर पूरे तने को लपेट लेती है। प्रभावित तने का ग्रसित भाग कालिख जैसा हो जाता है व उसमें स्कलेरोशिया बन जाते हैं व तने की ऊपरी पर्त छोटे-छोटे टुकड़ों में फट जाती है। अत्यल्प गोल धारी वाले अनियमित आकार के धब्बे पत्तियों पर भी बन जाते हैं जो बढ़कर बड़े लहरदार धब्बों में बदल जाते हैं।

आल्टर्नेरिया पर्ण चित्ती Alternaria Leaf spot : इस रोग के हरिमाहीन एवं पनीले धब्बे पत्ती की ऊपर की सतह पर हो जाते हैं। इस रोग के धब्बे धूसर रंग के अनियमित आकार के एवं पीलापन लिए सुराख वाले होते हैं। पत्ती के शिखाग्र के भाग पर हल्के

से गहरे धूसर रंग की अंगमारी हो जाती है। अंगमारी से प्रभावित पत्ती कुरकुरी होकर अन्दर की ओर मुड़ जाती है। धब्बों के पास की लघुशिरा व शिरा ऊतकक्षयी हो जाती है।

तना विगलन Stem rot: तने पर रोग का संक्रमण मिट्टी की सतह के पास या तने के सबसे निचले हिस्से पर होता है। इस रोग के लक्षण सूखे मौसम में मिट्टी की सतह के नीचे एवं गीले मौसम में मिट्टी की सतह के ऊपर तने पर पाये जाते हैं। शुरु में मिट्टी की सतह के पास तने पर गहरी धूसर विक्षति प्रकट होती है फिर यह विक्षति सफेद कवक जाल से तने के प्रभावित भाग को ढक लेती है। रोग बढ़ने के साथ संक्रमित भाग में सरसों के बीज के आकार एवं रंग के स्कलेरोशिया दिखाई देने लगते हैं। स्पष्ट सड़न नीचे की ओर प्रकट होती है एवं पौधे के हरे भाग पीलापन एवं धूसर रंग के होकर मुरझा जाते हैं। रोग के संक्रमण से एक या दो शाखायें या फिर पूरा पौधा मर जाता है।

मूंगफली कली परिगलन रोग Peanut bud necrosis disease: रोग के प्रारंभिक लक्षण नयी पत्तियों पर क्लोरोटिक धब्बों के रूप में प्रकट होते हैं एवं फिर क्लोरोटिक परिगलित छल्लों के रूप में विकसित हो जाते हैं। फसल पर टर्मिनल कलिका का परिगलन हो जाना इस रोग का विशेष लक्षण है। सहायक प्ररोह की वृद्धि रुकना, पर्णकों की कुरूपता एवं पत्तियों का परिगलन हो जाना इस रोग की मुख्य पहचान है। अगर पौधे पर रोग का संक्रमण शुरु की अवस्था में हो जाता है तो पौधे की वृद्धि रुक कर पौधा झाड़ी जैसा रह जाता है। यदि रोग का संक्रमण पौधे पर एक माह बाद होता है तो पौधे की कुछ शाखायें एवं शीर्षस्थ भाग ही प्रभावित होता है।

मूंगफली तना परिगलन रोग Peanut stem necrosis disease: यह रोग भी मूंगफली की फसल में काफी नुकसान पहुँचाता है।



मूंगफली तना परिगलन रोग से संक्रमित

मूंगफली तना परिगलन रोग से संक्रमित फलियाँ

किट्ट रोग Rust: रोग के लक्षण नारंगी लालिमा युक्त भूरे रंग के यूरिडो स्पॉट के रूप में पत्ती की निचली सतह पर प्रकट होते हैं। बाद में ये स्पॉट पत्ती की ऊपरी सतह एवं पौधे के अन्य वायुवीय भागों पर भी दिखायी देने लगते हैं, ये यूरिडो स्पॉट अलग-अलग या फिर समूह में होते हैं। स्पॉट पत्ती की



कीट रोग से संक्रमित पौधा



आल्टर्नेरिया पर्ण दाग से ग्रसित पौधा



तना विगलन संक्रमित पौधा



मूंगफली कली परिगलन रोग से संक्रमित